पंगु मस्तिष्क

❑ सुरेश पण्डित

श्रीलंका के सुविख्यात समाज शास्त्री सुसान्त गुणतिलक अपनी पुस्तक 'पंगु मस्तिष्क' में औपनिवेशिक शिक्षा और संस्कृति के प्रसार, उसकी कार्य विधि ओर प्रक्रिया पर रोशनी डालते हुए कहते हैं कि प्राय: व्यापारिक, औद्योगिक और वर्तमान नव औपनिवेशिक रूपों में प्रकट होने वाले विभिन्न आर्थिक आक्रमणों से पिछली कुछ शताब्दियों में हुए योरोपीय विस्तार ने लगभग सारे विश्व को सांस्कृतिक स्तर पर पूरी तरह अपने प्रभाव क्षेत्र में ले लिया है । इस सांस्कृतिक साम्राज्यवाद ने स्थानीय संस्कृति, स्थानीय कलाओं तथा पारंपरिक विज्ञानों की स्थानीय प्रणालियों को ध्वस्त कर अपने जीवन मूल्यों, जीवन शैलियों तथा आचार विचारों को प्रत्यारोपित करने की निरन्तर कोशिश की है, जो अभी तक भी जारी है ।

पिछले पाँच सौ सालों में एशिया, अफ्रीका और अमरीका के विभिन्न क्षेत्रों पर जो योरोपीय संस्कृति थोपी गई, उसके पक्ष विपक्ष में चाहे जो कहा जाय, यह तथ्य निर्विवाद है कि उसने औपनिवेशिक संस्कृति को जन्म दिया। इससे पहले उन क्षेत्रों की अपनी जीवन्त व निरन्तर प्रवाहशील संस्कृतियां थीं । खोजी इतिहासकार इस बात से हैरान हो जाते हैं कि शिकार से भोजन का संग्रह करने वाले लोगों के भूमि और संसाधन संबंधी ज्ञान को ही एकत्र कर यदि संपादित व प्रकाशित कर दिया जाय तो हजारों खंडों वाले पुस्तकालय खचाखच भर जायेंगे । निश्चय ही यह मौखिक ज्ञान का जटिल भण्डार कुछ कुछ व्यक्तिगत तो कुछ कुछ सामाजिक रहा होगा। इस मौखिक ज्ञान के अपार भण्डार के पीछे किसी क्षेत्र विशेष की जिस संस्कृति की झलक मिलती है वह कितनी समृद्ध, कितनी विविधतापूर्ण रही होगी, इसका तो आज अनुमान लगाना भी एक दुष्कर कार्य है ।

इसी प्रकार शिकार-भोजन संग्रहण को जिस नवप्रस्तर क्रान्ति ने कृषि व्यवस्था में बदल दिया वह भी दक्षिण एशिया के इतिहास का एक ऐसा नया मोड़ था जिसने यद्यपि खेती को तो संभव बनाया, परन्तु मनुष्य को प्राप्त होने वाले भोजन की मात्रा व किस्में कम हो गईं । आश्चर्य है इस कमजोर बिन्दु के बावजूद कृषि व्यवस्था ने पहले सिंधु घाटी को और फिर गंगा के मैदान में नागर सभ्यता के विकास को संभव बनाया । सिन्धु घाटी सभ्यता का जो विवरण आजकल उपलब्ध है उससे तत्कालीन अर्थव्यवस्था, रहन-सहन व खान-पा का परिचय तो मिलता ही है यह भी प्रमाणित हो जाता है कि उसके अस्तित्व काल में अधिक बड़े परिवर्तन नहीं हुए, आन्तरिक हिंसा भी नहीं हुई और समाज धार्मिक उपयों से एक श्रेणीकृत व्यवस्था में अनुशासित रहा। दूसरी ओर गांगेय प्रदेश में आर्यीकरण के समय तक जाति व्यवस्था के आधार पर समाज का वर्गीकरण हो चुका था। इसमें वैश्य और शूद्रों का दर्जा योद्धाओं और पुरोहितों के मुकाबले काफी नीचे का था। प्राक् औपनिवेशिक विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियां इसी तरह अपनी अपनी विविध विशेषताएं लिये पनप रही थी । श्रीलंका के सुविख्यात समाज शास्त्री सुसान्त गुणतिलक अपनी पुस्तक 'पंगु मस्तिष्क' में औपनिवेशिक शिक्षा और संस्कृति के प्रसार, उसकी कार्य विधि ओर प्रक्रिया पर रोशनी डालते हुए कहते हैं कि प्राय: व्यापारिक, औद्योगिक और वर्तमान नव औपनिवेशिक रूपों में प्रकट होने वाले विभिन्न आर्थिक आक्रमणों से पिछली कुछ शताब्दियों में हुए योरोपीय विस्तार ने लगभग सारे विश्व को सांस्कृतिक स्तर पर पूरी तरह अपने प्रभाव क्षेत्र में ले लिया है । इस सांस्कृतिक साम्राज्यवाद ने स्थानीय संस्कृति, स्थानीय कलाओं तथा पारंपरिक विज्ञानों की स्थानीय प्रणालियों को ध्वस्त कर अपने जीवन मूल्यों, जीवन शैलियों तथा आचार विचारों को प्रत्यारोपित करने की निरन्तर कोशिश की है, जो अभी तक भी जारी है । इस आक्रमण ने दुनिया के विभिन्न देशों की विविधता, मौलिकता और चिन्तन शैली का हनन कर उनकी संस्कृतियों का अपने अनुरूप रूपान्तरण करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

इस पुस्तक के बारह अध्यायों में गुण तिलक इस सांस्कृतिक एकछत्रता को स्थापित करने की रणनीति को तो उजागर करते ही हैं इसमें संभावित छिद्रों को पहचानते हुए अपना पृथक् अस्तित्व बनाये रखने के उपायों की ओर भी संकेत करने का प्रयास करते हैं। वे जहां सोलहवीं शताब्दी से पहले तक की एशिया और अफ्रीका के देशों की संस्कृतियों के इतिहास के दीर्घाकार फलक की विविध रूपता और निरन्तर परिवर्तनशीलता को इस पुस्तक के विस्तार से लिपिबद्ध करते हैं वहीं पहले और बाद के योरोपीय इतिहास को भी

इसलिए रेखांकित करते हैं ताकि लोग दोनों की पूर्वापर स्थितियों से तो अवगत हों ही, यह भी जान जायें कि दोनों के एक दूसरें से संबंध बनाने के पीछे निहितार्थ क्या रहे हैं ।

इस सच्चाई को भी गुणतिलक बड़े प्रभावी ढंग से रखने में सफल हुए हैं कि विज्ञान और प्रविधि, जिसका घोषित उद्देश्य बिना किसी भेदभाव के मानव जाति के जीवन को बेहतर बनाने का होता है, का उपयोग गोरांग जातियों ने किस प्रकार औपनिवेशिक संस्कृति के विस्तार के लिए किया । इस सांस्कृतिक साम्राज्यवाद ने लोगों को उनकी सांस्कृतिक विरासत से तो विच्छिन्न किया ही उन्हें आर्थिक रूप से अपना आश्रित भी बनाया है ।

औपनिवेशिक संबंधों की प्रकृति में बदलाव आने के साथ साथ सांस्कृतिक उपनिवेशीकरण के दूसरे युग का आगमन हुआ। उन्नीसवीं सदी के मध्य से व्यापार की बजाय खानों, बागानों और अन्य प्रकार के कच्चे माल के प्रसंस्करण की गतिविधियों में पूंजी निवेश शुरू हुआ। परिणामस्वरूप अन्य शास्त्रों की अपेक्षा अर्थशास्त्र यकायक महत्वपूर्ण बन गया। विज्ञान और तकनीकी का इस्तेमाल इन प्रसंस्करण विधियों को उत्पादनकारी, सरल तथा सर्वसुलभ बनाने के लिए किया जाने लगा । इन दोनों के अलावा शिक्षा को भी अपना साम्राज्य बनाये रखने व विस्तारित करने के लिए एक उपकरण बनाकर इस्तेमाल करने में उन्होंने संकोच नहीं किया। सांस्कृतिक नियंत्रण के एक तरीके के रूप में शासक वर्ग ने अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाकर उसके जरिये पश्चिमी जीवन मूल्यों के प्रसार की रणनीति को अपनाया। आश्चर्य है अपने साम्राज्यवादी हितों को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने के लिये जिस अंग्रेजी को मैकाले शिक्षा का माध्यम बनाने पर अड़े थे, उसी अंग्रेजी को बनाये रखने के लिए ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राम मोहन राय ने भी जोरदार आवाज बुलन्द की । क्योंकि हिन्दू होते हुए भी वे आधुनिक ज्ञान विज्ञान से अपने सजातीयों को लैस कर उन्हें अंग्रेजों के समान उन्नत देखना चाहते थे ।

पश्चिमी ढंग के विश्वविद्यालयों की यहां स्थापना भी स्थानीय संस्कृति की कीमत पर हुई । साम्राज्यवादी अर्थ व्यवस्था को चलाने के लिए शासकों को प्रशासनिक और तकनीकी कर्मचारियों की आवश्यकता थी । उसकी पूर्ति के लिए जनता के उच्च वर्गीय लोगों को पश्चिमी मानविकी (प्रशासन के लिये) और पश्चिमी विज्ञान और तकनीक (औद्योगीकरण के लिये) का प्रशिक्षण दिया गया। शिक्षा व प्रशिक्षण का कोई संबंध स्थानीय परिवेश या राष्ट्रीय गौरव वर्धक अनुभूति से नहीं रखा गया । इतिहास कहो या भूगोल या फिर दर्शन विज्ञान, राजनीति शास्त्र ही क्यों न हो, इनकी पढ़ाई इंग्लैंड के इतिहास, भूगोल, दर्शन या राजनीति शास्त्र से शुरू होती थी, यूरोप महाद्वीप तक पहुंचती थी और फिर सारी दुनिया तक फैल जाती थी। पर उस देश की बडी ही संक्षिप्त सामान्य जानकारी दी जाती थी जिसके छात्रों को वास्तव में ये विषय पढ़ाये जाते थे । यहां तक कि विज्ञान के शिक्षण को भी उन्होंने पश्चिमाभिमुख बना दिया था । वनस्पतिशास्त्र की एक स्कूली परीक्षा में इस तरह के प्रश्न पूछे जाते थे - डेजी की तुलना डेंडेलिआन से करो ''अथवा'' गुलाब व बटर कप का अन्तर स्पष्ट करो। इस शिक्षा का परिणाम यह हुआ कि छात्र रटकर पास होने लगे । ज्ञान का आत्मसातीकरण, जो भारतीय शिक्षा का मूल था, उसे नकार दिया गया ।

शिक्षा में अंग्रेजी का वर्चस्व, ज्ञान की बजाय सूचना-संकलन को महत्व और पश्चिमाभिमुख जानकारियों का दूरगामी प्रभाव यह रहा कि स्वाधीन होने के बावजूद तीसरी दुनिया के देशवासी विदेशी सांस्कृतिक प्रभावों से मुक्त नहीं हो पाये । इस औपनिवेशिक मानसिकता को स्वयं स्वीकारने और अन्य लोगों तक संप्रेषित करने का काम मुख्यत: मध्यम वर्ग ने किया । यह वर्ग उपनिवेशकों के अभिभावकत्व में चालू की गई उच्च प्राथमिक और उच्च शिक्षा की उपज था। इसका बड़ा हिस्सा बुद्धिजीवियों, सरकारी मुलाजिमों, तकनीकी क्षेत्रों में काम में लगे लोगों को मिलाकर बना है । इसे बनाने के पीछे उनका एक मात्र उद्देश्य अपनी औपनिवेशिक तथा उत्तर औपरिनवेशिक अर्थनीति को इनके माध्यम से चलाये रखने का था । इनकी मनोवृत्ति हमेशा उच्च स्तरीय औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने तथा अपने आकाओं की नकल करने की रही । परिणामस्वरूप एक निहायत सतही किस्म का पश्चिमीकरण और एक छिछले किस्म की बुद्धिजीविता का उत्पादन हुआ। इन्होंने सेमिनार, फील्डवर्क, प्रायोगिक प्रशिक्षण जैसे परस्पर ज्ञानवर्धन के उपादानों को भी मात्र औपचारिक कर्मकाण्ड में बदल कर रख दिया।

इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक यद्यपि प्राक् औपनिवेशिक सांस्कृतिक विविधता के व्यापक परिप्रेक्ष्य का विस्तार से विवरण देती हुई सारी दुनिया के परवर्ती सांस्कृतिक उपनिवेशीकरण पर प्रकाश डालती है लेकिन आगे चलकर इस व्यापक फलक को संकुचित करते हुए लेखक स्वयं को एशिया पर, उसमें भी खास तौर पर दक्षिण एशिया पर केन्द्रित कर देता है । क्योंकि इस क्षेत्र विशेष पर ही उसे विशेषज्ञता हासिल है और इस ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना उसका अभिप्रेत रहा है । पुस्तक की छपाई, गेटप व जिल्दबन्दी के बारे में कुछ कहना मुनासिब नहीं होगा क्योंकि ग्रंथशिल्पी प्रकाशन इस बारे में पहले ही अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित कर चुका है । अनुवाद सुपरिचित कथाकार स्वयं प्रकाश ने किया है इसलिये उसमें कहीं भी भाषागत दुरूहता, अस्पष्टता व कृत्रिमता नहीं है । सब कुछ इतना सहज स्पष्ट व स्वाभाविक है कि लगता ही नहीं आप कोई अनूदित पुस्तक पढ़ रहे हैं ।◆